उपसंहार

उपसंहार

''चरित्रप्रधान उपन्यास 'सूत्रधार' और 'महात्मा' का तुलनात्मक मूल्यांकन'' के अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए उनका निचोड़ यहाँ सार रूप में प्रस्तुत है -

संजीव तथा डॉ. रवींद्र ठाकुर दोनों ऐसे रचनाकार हैं जो युगधारा में बहने की अपेक्षा उसे अपने काबू में रखकर विविध विधाओं का लेखन करते हैं। दोनों का साहित्य मौलिक एवं समृद्ध है। दोनों अपने-अपने साहित्य क्षेत्र में श्रेष्ठ रहे हैं। दोनों अपने देश, समाज एवं लोगों से अधिक सरोकार रखते हैं, उनकी ओर सकारात्मक नजरिए से देखते हैं। दोनों का जीवन साहित्य के लिए समर्पित है। दोनों का रहन-सहन बिल्कुल सीधा-सादा है। दोनों शोषित, पीड़ित, मध्यवर्गीय, दलित तथा नारी आदि का पक्ष लेते हैं। दोनों का अनुभव क्षेत्र व्यापक है। जहाँ कहीं भी दु:ख वेदना है उसे मानवतावादी दृष्टिकोण से दोनों चित्रित करते हैं। दोनों का साहित्य मानवतावाद का चिरंतनमूल्य सामने रखनेवाला होने के कारण उनके साहित्य को श्रेष्ठता प्राप्त हो गई है। दोनों जीवन के अनुभवों को अपने कलम में बाँध लेते हैं। दोनों कथा-साहित्यकार जीवन संग्राम के अपराजेय योद्धा, उदार मानवतावादी, रूढ़ि-परंपरा के ध्वंसक और प्रगतिवादी विचारक हैं। दोनों कला जीवन के लिए उपयोगी एवं प्रेरणा देनेवाली माननेवाली कवि तथा कथा साहित्यकार हैं।

संजीव के साहित्य का मुख्य विषय 'संघर्ष' है तो ठाकुर के साहित्य में विविधता दिखाई देती है। संजीव प्रशासकीय क्षेत्र से जुड़े हैं तो ठाकुर अध्यापक क्षेत्र से। डॉ. ठाकुर के दो कविता संग्रह प्रकाशित हैं तो संजीव का एक भी कविता संग्रह नहीं है। डॉ. रवींद्र ठाकुर का समीक्षात्मक साहित्य बहुत है, संजीव का एकदम छुटपुट है।

द्वितीय अध्याय के अध्ययन से ये निष्कर्ष सामने आते हैं कि दोनों उपन्यासों की भाषा अधिक यथार्थ मूलक है। पूरी कथा चरित्रोत्घाटन करने में सफल सिद्ध हुई है। कथा में कहीं निरसता नहीं है। दोनों उपन्यासकारों ने नायकों के जीवन को प्रस्तुत करने में कोई भी भूल नहीं की है। सभी बातें कालानुरूप हैं। दोनों ऐतिहासिक चरित्रप्रधान उपन्यास हैं। पृष्ठों की संख्या की दृष्टि से 'सूत्रधार' 344 पृष्ठों का तो 'महात्मा' 456 पृष्ठों

का बृहद् उपन्यास है। 'सूत्रधार' के भिखारी ठाकुर तथा 'महात्मा' के महात्मा जोतिराव फुले दोनों का जीवन संघर्ष की यात्रा रहा है। विवेच्य उपन्यास के दोनों नायक सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा करनेवाले थें। उपन्यास में प्रस्तुत संवाद योजना अत्यंत सफल साबित हुई है, जिससे यथार्थता सजीवता के साथ प्रस्तुत हुई है।

'सूत्रधार' के भिखारी ठाकुर अशिक्षित थे तो 'महात्मा' के फुले शिक्षित होने के साथ उन पर टॉमस पेन, लिंकन, शिवाजी महाराज आदि के विचारों का प्रभाव था। भिखारी ठाकुर से अधिक फुले के विचार क्रांतिकारी थे। 'सूत्रधार' की भाषा अधिक वर्णनात्मक एवं काव्यात्मक है बल्कि 'महात्मा' की भाषा अधिक काव्यात्मक नहीं है।

तृतीय अध्याय में प्रधान चरित्रों का तुलनात्मक मूल्यांकन करने के पश्चात् स्पष्ट होता है कि 'तुलना' में सिर्फ समानता या विषमता ही नहीं देखी जाती तो दोनों दृष्टियों पर तटस्थता से अंकन किया जाता है। समानता की दृष्टि से दोनों पात्रों में अधिक साम्य दिखाई देता है। दोनों प्रधानचरित्र समाजसुधारक के रूप में प्रस्तुत होते हैं। परंपरागत सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तन की आकांक्षा कर समाज को एक स्वस्थ दृष्टि देने की दोनों की चाह थी। दोनों के विचार आदर्श एवं प्रगतिशील थे। दोनों संवदेनशील कवि के रूप में प्रकट होते हैं। दलित, पीड़ित, शोषित जनों के उद्धार के लिए दोनों ने प्रयास किए। अपने इस कार्य में दोनों को कड़ा संघर्ष भी करना पड़ा लेकिन अपने इस संघर्ष में वे कभी पीछे नहीं हटे। व्यक्ति के अधिकार के प्रति दोनों के विचार समान थे। स्त्री स्वतंत्रता की बात दोनों को मान्य थी। इस प्रकार दोनों की समानताएँ अधिक हैं।

विषमता की दृष्टि से दोनों चरित्रों का परिवेश पूरी तरह से अलग है और दोनों चरित्रों के कालावधी में भी काफी अंतर है। दोनों प्रधान चरित्रों के समय की सामाजिक स्थिति में भी अंतर है। भिकारी ठाकुर एक लोककलाकार होने के कारण उन्होंने अपने नाचप्रदर्शन के द्वारा अपना संदेश लोगों तक पहुँचाया वहीं महात्मा फुले जी अध्यापक होने के कारण अपने अध्यापन के द्वारा उन्होंने अपना संदेश लोगों तक पहुँचाया।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत दो अलग-अलग चरित्रों के चरित्र-चित्रण की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक मूल्यांकन किया है जिसमें सबसे पहली प्रवृत्ति ऐतिहासिकता

निर्वाह की है। 'सूत्रधार' में हमें 19 वीं सदीं के अंतिम दो दशकों से लेकर 20 वीं सदी के सातवें दशक तक का वर्णन मिलता है। उपन्यास में स्वाधीनता आंदोलन, अंग्रजों का शासन, मनुष्य की अन्याय-अत्याचार से टक्कर लेने की कोशिश, सड़ी-गली रुढ़ियों का किया विरोध, नाना द्वंद्वभेदों, परंपराओं, संस्कारों, वेशभूषा-केशभूषा से लेकर खान-पान पद्धतियाँ, विवाह, जन्मविधि के संस्कारों का अंकन हुआ है। 'महात्मा' में भी हमें तत्कालीन समाज की स्थिति, रूढ़ि-परंपरा को ढ़ोनेवाला उच्चभ्रू वर्ग, निम्नवर्ग की दयनीयता, सामाजिक जीवन का यथार्थ आदि का अंकन ऐतिहासिकता रूप से हुआ नजर आता है।

साथ में दूसरी प्रवृत्ति स्थल-काल निर्वाह की, जिसमें देशकाल के तत्कालीन समय के अनुरूप सामाजिक वातावरण, रूढ़ि-परंपराओं, रीतिरिवाजों का वर्णन आया हैं। उपन्यासों में समय के अनुरूप अकाल, बाढ़, भूकंप, समाजव्यवस्था, शासनपद्धति, लोगों की मानसिकता आदि का वर्णन स्थल-काल अनुरूप हुआ है। अपने स्वाभाविक, निश्छल, व्यावहारिक तथा विश्वासमय रूप में जन के साथ विश्व को भी जागृत करने का कार्य इन दो चरित्रों ने किया है, जिसमें 'सूत्रधार' के भिखारी ठाकुर तथा 'महात्मा' के महात्मा जोतिराव फुले का महात्मा रूप दृष्टिगोचर होता है।

भिखारी ठाकुर एवं महात्मा जोतिराव फुले दोनों श्रेष्ठ विचारवंत के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। दोनों के विचार समाज के हित में थे जो मानवता को श्रेष्ठ मानते थे। दोनों नायक शोषितों के प्रति करूणभाव और उनके विकास की दृष्टि रखनेवाले थे।

उपन्यास के दोनों नायक अधिकार की लड़ाई लड़नेवाले थे। समाज के संकुचित वृत्ति के विरोध में अपनी आवाज और कलम उन्होंने चलाई। पीढ़ियों से निद्रिस्त समाज को उसके अधिकारों के बारे में सचेत किया। दोनों नायक तत्कालीन समाज में व्याप्त असंख्य रूढ़ियों, दुष्ट प्रथाओं, जर्जर धर्मतत्वों को नकार देते हैं। समाज में स्थापित इस व्यवस्था का तीव्र विरोध करते हैं और इन सबके साथ आधुनिक विचारों को अपनाते भी हैं। एक स्वस्थ, आदर्श एकता से बंधे समाज का स्वप्न दोनों नायक देखते हैं। चरित्र की प्रवृत्तियों में दोनों नायकों का क्रांतिकारी रूप भी यहाँ प्रस्तुत हुआ है।

सूत्रधार में हमें 19 वीं सदी के अंतिम दो-दशकों से लेकर 20 वीं सदीं के सातवें दशक का वर्णन है, तो 'महात्मा' में 19 वीं सदीं का वर्णन आया हैं। 'सूत्रधार' स्थल-काल का वर्णन 'महात्मा' की अपेक्षा अधिक है।

पंचम अध्याय में विवेच्य उपन्यास का औपन्यासिक कला की दृष्टि से विवेचन-विश्लेषण करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि दोनों उपन्यासों में कुछ साम्य तथा कुछ वैषम्य भी हैं - विवेच्य दोनों रचनाकारों ने अपनी औपन्यासिक कला में कथाशिल्प, चरित्र-चित्रण शिल्प, संवाद शिल्प, देशकाल वातावरण शिल्प, भाषा-शैली शिल्प तथा उद्देश्य शिल्प आदि छः तत्त्वों का प्रयोग किया है। कथाशिल्प के अंतर्गत दोनों उपन्यास चरित्रप्रधान होने के कारण 'सूत्रधार' में भिखारी ठाकुर का और 'महात्मा' में महात्मा जोतिराव फुलें का चरित्रोत्घाटन यहाँ हुआ है, जहाँ कल्पना का प्रयोग अत्यल्प हुआ है। संवाद पात्र और प्रसंगानुरूप हैं। विवेच्य उपन्यासों में अरबी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग सफलतापूर्वक हुआ है। विवेच्य उपन्यासों में आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, प्रश्नात्मक, पत्रात्मक आदि शैलियों का प्रयाग किया है। वातावरण की दृष्टि से सामाजिक, प्राकृतिक, राजनीतिक वातावरण की सुंदर अभिव्यक्ति दोनों उपन्यासों में हमें देखने को मिलती है। दोनों रचनाकारों का साहित्य अत्यंत उद्देश्यपूर्ण हैं। दोनों ने अपने-अपने चरित्रों को लोगों के सामने लाने का यथार्थ प्रयास किया है।

❑ प्रस्तुत शोध-कार्य की उपलब्धियाँ -

1. संजीव के 'सूत्रधार' और डॉ. रवींद्र ठाकुर के 'महात्मा' में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का बोध होता है जो वर्तमान परिस्थितियों की ओर इशारा करता है और उनके सुधार के लिए दिशा भी देता है।
2. विवेच्य उपन्यासों के नायक भिखारी ठाकुर और महात्मा जोतिराव फुले के चरित्र की विविध विशेषताएँ प्रस्तुत हुई हैं जो सार्थक जीवन जीने का संदेश देती हैं।
3. विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त नायकों के विचार सदियों से पददलित समाज के शोषण के खिलाफ आवाज उठाकर सामाजिक परिवर्तन की माँग करते हैं जो आज अधिक प्रासंगिक लगते हैं।

4. विवेच्य उपन्यासों में चरित्र-चित्रण की विविध प्रवृत्तियों का चित्रण हुआ है, जिससे सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण यहाँ हुआ है।

5. प्रस्तुत उपन्यास के नायकों का जीवन याने अखंड संघर्ष की यात्रा ही है इससे नई पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी इसमें संदेह नहीं।

6. दोनों उपन्यास के नायकों के आदर्श विचार, उनका संघर्ष, बलिदान आदि वर्तमान समाज के युवाओं के लिए निश्चय ही प्रेरक एवं मार्गदर्शक सिद्ध होंगे इसमें संदेह नहीं।

❑ अध्ययन की नई दिशाएँ -

संजीव का तथा डॉ. रवींद्र ठाकुर के साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. ''‘सूत्रधार’ तथा ‘महात्मा’ का विचार पक्ष : तुलनात्मक अध्ययन''

2. ''संजीव और रवींद्र ठाकुर के उपन्यासों के नायकों का तुलनात्मक अध्ययन''

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के प्रश्चात् प्राप्त हुए हैं, जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है।

❑ ❑ ❑ ❑